



वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

अर्थ : हे गणेश देवता! आप विशाल रूप तथा सूर्य के समान चमकने वाले हैं। आप से आशंका और भय नहीं है कि हमारा हमारे सभी कार्यों में कोई बाधा न हो ॥

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥जय॥ एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी। माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥जय॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥जय॥ पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लहदुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥जय॥
दीनन की लाज रखो, शम्भू पुत्र वारी। कामना को पूरा करो, ज्यों बलिहारी ॥जय॥ जो तेरा ध्यान करे ज्ञान मिले उसको। छोड़ तुझे और भला ध्याऊँ मैं किसको ॥जय॥
गजाननं भूत गणादि सेवितं कपिरथ जम्बू फल चारु भक्षणम्। उमा सुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पैकजम् ॥



वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

अर्थ : हे गणेश देवता ! आप विशाल रूप तथा सूर्य के समान चमकने वाले हैं । आप से आशंका और चिन्ता है कि हमेशा हमारे सभी कार्यों में कोई बाधा न हो ॥

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥जय॥ एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी। माथे सिन्दूर सोहे, भूसे की सवारी ॥जय॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥जय॥ पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लहदुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥जय॥
दीनन की लाज रखो, शम्भू पुत्र वारी। कामना को पूरा करो, ज्यों बलिहारी ॥जय॥ जो तेरा ध्यान करे ज्ञान मिले उसको। छोड़ तुझे और भला ध्याऊँ मैं किसको ॥जय॥

गजाननं भूत गणादि सेवितं कपिरथ जम्बू फल चारु भक्षणम्। उमा सुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पैकजम् ॥



श्री यन्त्रम्



महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ॐ॥
 उमा, रमा, ब्रह्मणी तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ॐ॥
 दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, अर्द्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ॐ॥
 तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की जाता ॥ॐ॥
 जिस घर तुम रहतीं, तहाँ सब सद्गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ॐ॥
 तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ॐ॥
 शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ॐ॥
 महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ॥

MCNG-3302



श्री यन्त्रम्

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ॐ॥

उमा, रमा, ब्रह्मणी तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ॐ॥

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ॐ॥

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की आता ॥ॐ॥

जिस घर तुम रहतीं, तहै सब सद्गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ॐ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ॐ॥

शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ॐ॥

महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ॥



श्री यन्त्रम्

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥३॥

उमा, रमा, ब्रह्मणी तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥३॥

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥३॥

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की जाता ॥३॥

जिस घर तुम रहतीं, तहें सब सद्गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥३॥

तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥३॥

शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥३॥

महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता। जर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥३॥





आरती श्री काली माता की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खण्ड्य वाली, तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उद्धरे तेरी आरती।
 तेरे भक्तजनों पर मैया भीड़ पड़ी है भारी, दानव दल पर टूट बढ़ो माँ कर के सिंह सवारी,
 सो सो सिंधो से है करमाली, है दम भुजओं वाली, दुष्टियों के दुखड़े निवारती, ओ मैया हम सब ...
 माँ खेदे कइ है हम जग में बड़ा ही निर्मल नाश, पुन कपल मुने है पर ना माता मुनी कुमात,
 सबने करुना बरसाने वाली, अपुन बरसाने वाली, दुष्टियों के दुखड़े निवारती, ओ मैया हम सब ...
 नहीं माँगते धन और टीलत न चाँदी न सोन, हम नो पावे माँ तेरे मन में एक छेड़ा सा कोन,
 सब को विगड़ी बचाने वाली, लाज बचाने वाली, सतिषों के सब को मत्तारती, ओ मैया हम सब ...

शर्वसंग्रह माँधने, शिरो सर्वार्थ साधिके। शरम्भे उपासके गौरी, भावार्थि भगोऽस्तुते॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय शवांग गौरी। तुमको निरिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ जय अम्बे ॥
 माग शिन्दुर विराजत, टीकने भुगमद को। उज्ज्वल से दोष भवना, चन्द चदन नीक ॥ जय अम्बे ॥
 कनक सागन कलेवर रपताम्बर राजे। स्वतः पुष्प गल माता, कण्ठन पर सावे ॥ जय अम्बे ॥
 केहरि वाहन राजत, स्वदण्ड खण्ड्य धारी। सुत नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥ जय अम्बे ॥
 कानन कुण्डल शोभित, नाराटो घौली। कोटिक चांद दिवाकर, राम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे ॥
 शुभ-निशुभ विपक्ष, गहिरासुर धारी। भुजविलोचन नयन, निरिदिन भवभारी ॥ जय अम्बे ॥
 चण्ड-गुण्ड संहारे, रतिगता मौज हरे। मनु कंटक पीड गारे, भुज-भयहीन करे ॥ जय अम्बे ॥
 ब्रह्माली रुद्राग्ने, बुध कनका रानी। आग-विगम चरानी, तुम शिव घटरानी ॥ जय अम्बे ॥
 चौसठ चौविनि रावत, नृप्य करत पैरो। बाजल लाज मुवंग, और बाजल खगर ॥ जय अम्बे ॥
 तुम ही जग की माता, तुम ही हो भवना। भवतन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥ जय अम्बे ॥
 तुम नार अति रतिगता, नर गुदा धारी। मनमोहित फल पावत, रोमत नर-नारी ॥ जय अम्बे ॥
 कंचन माल विराजत, अगर कपूर बाली। की मालकंजु मे राजत, कोटि रत्न ज्योति ॥ जय अम्बे ॥
 माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर पावे। कलत शिवानन्द क्यमी, सुख-सम्पत्ति पावे ॥ जय अम्बे ॥



श्री दुर्गा चालीसा

सर्वमंगल मांग्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्रयम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

नमो नमो तुमै सुख करीये । नमो नमो अम्बे दुःख हरये ॥
 विरकार है ज्योति तुम्हारी । सिद्धि लोक पीली डकिपारी ॥
 कलि ललाट मुख महा विनासा । नेत्र सत्तल भुजुटि विकराला ॥
 रूप मातु को अधिक सुहाये । दरल करल जन अलि सुखवाये ॥
 तुम संसार जहित लय कोना । पावन हेतु अन्न भन दोना ॥
 अन्नपूर्णा हुई जग फाला । तुम ही अलि सुन्दरी बाला ॥
 प्रलम्बकाल सब नशान हारी । तुम गौरी शिव सेकर प्यारी ॥
 शिव योगी तुम्हारे गुण गावै । ज्ञान-विष्णु तुम्हें पित भवार्थ ॥
 रूप शारंगती का तुम धारा । दे सुमुद्रि चापि मुनिन ज्वारा ॥
 धरयो रूप परमेश को अम्बा । परगत भई रूपहु कर छाया ॥
 रक्षा करि प्रह्लादक ज्वायो । हिरण्यकुश को उबग पलायो ॥
 लक्ष्मी रूप धरौ जग पार्वी । श्री नारायण ओग समार्वी ॥
 शीतलपुष्पु मे करल बिलारा । दया पिंघु सीनै मय आरा ॥

हिमालय में तुम्हीं भवानी । महिमा अमिता न जाल भवानी ॥
 भवानी अरु भुवनाती माता । भुवनेश्वरि बगल सुख पाता ॥
 श्री पैरम तारा जग तरिणी । किन्तुभाल भव दुःख निवारिणी ॥
 कोहरि वाहन सोहे भवानी । लोचन नीर बालन अम्बानी ॥
 कार में खम्बर खड्ग विराजै । जाको देख कालन डर भावै ॥
 सोहे अस्त्र और विद्वला । जाते उलट खड्ग हिय गुला ॥
 शरणागत में तुम्हीं चिरायल । सिद्धि लोक में रक्षा बजाल ॥
 तुम्हें निरुत्पन्न जानय तुम मारे । रक्त नीर खीन संहार ॥
 महिषासुर तुम अलि अधिपानी । जेहि अध भार मही जलुलानी ॥
 रूप कराल काली को धारा । रोग राहित तुम निधि संहार ॥
 परी भीडु शङ्खन पर जय जय । भई चहाय मातु तुम सब लय ॥
 अमरपुत्री अरु बाला लोका । सब सक्ति सब रह अवरोका ॥
 ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी । तुम्हें कप पुरै नर-नारी ॥

ऐम भविल से जो मन गावै । तुम पारिद निकट नहिं आवै ॥
 भवार्थ तुम्हें जो नर मन लावै । जन्म मरण तगको मुक्ति आवै ॥
 जोगी सुर-मुनि कहते मुकरी । योग न होई बिन शक्ति तुम्हारी ॥
 रोकन अवधारन लय कोनै । काम क्रोध मोहि सब लीनै ॥
 निरिदिन भजन धरा शंकर को । काहु काल नहिं सुमिरै तुमको ॥
 शक्ति-रूप को मरन न पायो । शक्ति गई तब मन खिजायो ॥
 शरणगत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगजम्बा भवानी ॥
 भई प्रदान आदि जगजम्बा । ईश शक्ति नहिं कोन बिलम्बा ॥
 सोको मातु कष्ट अलि पेटे । तुम बिन कोन हो दुःख मेरे ॥
 अना तुम्हें निरट सहाये । रोग दोष मेरे निकट न आवै ॥
 सतु नम कोनै महादनी । सुमिरै इकविड तुम्हीं भवानी ॥
 करो कृपा हे मातु बपारा । कटि-चिदि दे करहु निहारा ॥
 जब राति बिजै रम्यफल काई । तुम्हरी लस मैं सदा सुखई ॥

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै । सब सुख भोग परम पद पावै ॥



सर्वमंगल मांग्ल्यै, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ जय अम्बे ॥
 मांग, सिन्दूर विराजत टीको भृगुमद को। उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र बदन नीको ॥ जय अम्बे ॥
 कनक सम्भन कलेवर, रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ जय अम्बे ॥
 केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हरी ॥ जय अम्बे ॥
 कानन कुण्डल झोमित, नासाणे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे ॥
 शुभ-निशुभ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्रशिलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे ॥
 सङ्कट-मुण्ड संहारे, झोमित बीज हरे। नभु कंटम दोर मारे, सुर-भवहीन करे ॥ जय अम्बे ॥
 ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे ॥
 चौसठ योगिनि गायत, नृत्य करत मैरी। बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु ॥ जय अम्बे ॥
 तुम ही जग की माता, तुम ही हो भर्ता। भवतन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति कर्ता ॥ जय अम्बे ॥
 मुजा चार अति झोमित, वर मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ जय अम्बे ॥
 कंधन खाल विराजत, अगर कपूर घाती। (श्री) मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे ॥
 माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे। कहत सिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावे ॥ जय अम्बे ॥



सर्वमंगल मांग्ल्यै, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्मे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ जय अम्मे ॥	चण्ड-मुण्ड संहारे, शोभित बीज हरे। नधु कैटभ योड मारे, सुर-भयहीन करे ॥ जय अम्मे ॥
सांग, सिन्दूर विराजत टीको मुगमद को। उज्ज्वल से दोड नयना, चन्द्र बदन नीको ॥ जय अम्मे ॥	ब्रह्माजी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम-निगम वखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्मे ॥
कनक सभान कलेवर, रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ जय अम्मे ॥	घोसट योगिनि गावत, नृत्य करत मैरो। बाजत ताल मृदंगा, और बाजत टमरु ॥ जय अम्मे ॥
केहरि वाहन राजत, खट्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥ जय अम्मे ॥	तुम ही जग की मावा, तुम ही हो भर्ता। भवतन की दुख हरता, सुख सम्पति कर्ता ॥ जय अम्मे ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाये मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय अम्मे ॥	भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी। मनवाछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ जय अम्मे ॥
शुभ-निशुभ विदारे, महिषालुत घाती। धूम्रगिलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्मे ॥	कंधन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। (श्री) मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्मे ॥

माँ अम्मे जी की आरती, जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावे ॥ जय अम्मे ॥



श्री कृष्ण विहारी जी की आरती

आरती कृष्ण विहारी जी । श्री गिरधर कृष्णपुरी जी ॥ गले में वैजयन्ती माला,
बनावै मुरली मधुर आला । जवन में कृष्णदल झलकाता, नंद के आनन्द नन्दलाता ।
गगन सग अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लठन में टाढ़े कमलाली ।
धूमर-सी अलक, कान्तुरी-तिलक चंद्र सी झलक, सलिल खनि रसमा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कमकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को तरसै । गगन सौ सुमन रासि जरसै ।
बजे मुरधंग, मधुर विरदंग ग्यालिन संग, अलुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हार्तिण ओगंगा । स्मरण ते होत मोह भंगा,
बसी शिव सौस जटाके बीच, हरे अंध कोच । चरण खनि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती उज्जवल तट रेनु, बज रही बुन्दावन येनु । चहूँ दिशि गोपि ग्याल येनु,
हैमन्त मुनु मोद खोदसै चर, कटख भव-चोर, डेर सुन बीन भिखारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भवत जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्याये फल पाये, दुःख विनसे मन का ॥ प्रभु ॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, जरण गाहूँ किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम विन और न दुख, जास करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पाखण्ड परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुण के सागर, तुम घालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूरख खल करी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दवायग, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
वीन बन्धु दुःख हनता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाम उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय शिकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ भद्रा भवित बढाओ, सन्तन की सेवा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥



श्री कुंज बिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कुण्डमुरारी की ॥ गले में वैष्णवन्ती माला,
बजाये मुरली मधुर आवा । अवन में कुण्डल झलकाए, नंद के आनन्द नन्दलाला ।
गगन सय अंग कांति काली, राधिका समक रही आली, लखन में राखे बनमाली ।
धुमर-सौ अलक, कस्तुरी-तिलक चंद्र सौ झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कनकमय मोर-मुकुट बिलसी, देखा दर्शन को तरसी । गगन सौ सुमन राखि बरसी ।
बजे मुरली, मधुर मिरदंग ग्यालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भाई गंगा, सकल-मल-हारिणि शीरंगा । स्मरण ते होत मोह भंगा,
बसी लख सीमा जटाकें सोन, हरे अथ कौन । चरण छवि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती ठण्डावत तट रेनु, बज रही बुन्दावन बेनु । चहुँ दिशि गोपी ग्याल धेनु,
हैंसत मुदु मंद चांदनी चंद्र, कटत भव-फंद, डेर सुन दोन बिहारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भवत जनों के राखत, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्याये फल पावे, दुःख विनसे मन का ॥ प्रभु ॥ सुख-संपत्ति घर आवे, कष्ट गिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूख, आस करें जिराली ॥ॐ॥
तुम पुरख परमात्म, तुम अनन्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं गुरुख खल कापी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक जगोप, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किन मिथि मिलूँ दयालय, तुमको मैं चुनति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हन्ता, तुम स्वक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, ह्मन पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ अज्ञा भक्ति बढाओ, सन्तन की रोखा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥



ॐ कृष्ण विहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥ गले में वैजयन्ती माला,
बजाये मुरली मधुर आला । ब्रजन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला ।
गान सय अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लडन में ठाढ़े बनगाली ।
धूमर-सी अलक, कनकुरी-तिलक पंख सी झलक, रत्नित खनि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को हरसै । गगन सौं सुमन रासि बरसै ।
बजे मुरबंग, मधुर बिरदंग ग्यालिन संग, अलुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भाई गंगा, सकल-मल-हार्तिण ओगंगा । स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी शिव सोय जटाके बीच, हरे अर्ध बीच । चरन खनि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती उज्जवल तट रेनु, बज रही बुन्दावन सेनु । चढ़ै लियि गोपि ग्याल सेनु,
हैसत मुनु मंद बाँदसै चंद, कटखत धन-पाँद, डेर सुन रीत भिखारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती श्री बालकृष्ण जी की

आरती बाल कृष्ण की कीजे । अपनो जन्म साफल कर लीजे ॥
श्री यशुदा को परम दुलारो । बाबा की आँखियन की तारों ॥
गोपिन के प्राणन ते प्यारो । इन पे प्राण निछावर कीजे ॥ आरती ॥
बलदाऊ को छोटी मेय्या । कनुआ कहि कहि बोले मेय्या ॥
परम मुदित मन लेत बलैय्या । यह छवि नैनन में भर लीजे ॥ आरती ॥
श्री राधा यर सुधर कन्हैया । ब्रज जन को नवनीत खवैय्या ॥
देखत ही मन लेत चुरैय्या । अपनो सरवर इनको दीजे ॥ आरती ॥
तोतरि बोलन मधुर सुहावे । राखन राग खेलत सुख पावे ॥
सोइ सुखी जो इनको ध्यावे । अब इनको अपनो कर लीजे ॥ आरती ॥



श्री कुंज बिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कुण्डमुरारी की ॥ गले में वैजयन्ती माला,
बजाये मुरली मधुर आला । अवन में कुण्डल झलकाता, नेद के अहन्द नन्दलाता ।
गगन सय अंग कौलि काली, राधिका चम्पक रही आली, लखन में छाये बनमाली ।
धूमर-सौ अलक, करतुरी-तिलक चंद्र सौ झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कनकमय मोर-मुकुट बिलसी, देवता दर्शन को तरसी । गगन सौ सुपन रासि बरसी ।
बजे मुरलींग, मधुर मिरदंग ग्वालिन संग, अद्भुत रति गोप कुम्हार की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा । स्मरन ते होय मोह भंगा,
बसी शिख सीम जटाके बीच, हरे अथ कौंच । चरन छवि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती उज्ज्वल रत रेनु, बज रही बुन्दारन बेनु । चहुँ दिशि गोपि ग्वाल बेनु,
हँसत मुदु मंद चांदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुन सौन भिरकारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भवत जनों के राकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्याये फल पाये, दुःख मिनते मन का ॥ प्रभु ॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अनावांसी ॥ प्रभु ॥ पातप्राप्त परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूर्ख खल कामी, क्षमा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस सिद्धि नितूँ दयानय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ अज्ञा भवित बड़ाओ, सन्तान की रोषा ॥ॐ॥
चन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥

॥ जय श्री राम ॥



श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरण सरोज राज, निज मनु मुकुट सुधारि । बरनवै रघुवर विमल जेसु, जो दासक कल खारि । बुद्धिहीन तनु जखनि के, सुनिवै पावन-कुमार । बल बुद्धि धिया देहु सोहि, हनुम कहेन विचार ॥
 जब हनुमान जैन दूर भागा । जब कबैसि हिंनु लोक उवागा ॥
 राम दूत आहुनि पल-पल । सोबैत पुन कवनपुन जाय ॥
 महावीर विराम करायी । कुपति निवार सुखी के मारी ॥
 कंचन बान विराज सुनेस । कानर कुपटल कुंभिर भेस ॥
 हाथ बज्र औ धारक चिह्नवै । बौधे मुँह लहेछ चारवै ॥
 हाँकर मुकन कंचरीकर । लोक प्रताप मात जग कनन ॥
 विरामकर मुँहें अति चमुर । राम काज करिबे को आचुर ॥
 प्रभु बरिष सुनिबे को वीर । राम लखन पीसा मन बधिरा ॥
 सुलभ साय हरि सिरीहिं रिखाव । बिकट साय धरि संक जराव ॥
 योग रूप धरि आचुर चोरो । रामचन्द्र को बाज रोवरो ॥
 लज्ज संकीर्तन लखन किये । जो रघुवीर हाथि जग लाये ॥
 रघुवीर कोही बहुत बहाई । भुव मन धिप भावहि सम भाई ॥
 सखन बान तुम्हारे लग गयै । अस कहि श्रीवीर को लपयै ॥
 सनकादिक प्रहारि मुनीस । नार नार सतिव अहीस ॥
 नम कुंभिर निपकात जहाँ से । कवि कोबिर कहि सकें कहौ ते ॥
 तुम उपकार सुदीर्घी कहिस । राम विराम कर कर रोका ॥
 तुम्हारे मन विभीषन मान । संकीर्तन भए सब जग जान ॥
 तुम सखन जोवन पर मनु । लोकको कहि मनु कल खनु ॥
 प्रभु मुद्रिक नैस मुख माही । जालीस लीप गये अजयज कहि ॥
 दुर्लभ करक जगत के जेते । सुख अजुल तुम्हारे लीते ॥
 राम दुसरे तुम रखबारे । होत न अज्ञात बिनु पैसरे ॥
 सब सुख लखै मुक्तारी सख । तुम रखक काहु को दर ना ॥
 जानन लोक सम्हारी आवे । लोने लोक होक ते कहै ॥
 भूत पिताव बिकट नहि आवे । मातापीर जब मान मुखवै ॥
 नहि योग हरे सब पीर । जगत निरन्तर हनुमन् बीर ॥
 संकट ते हनुमन् बुझावै । मन जग बचन भवन जो लावै ॥
 सब पर सब तापयो राख । निरक पाज सकल तुम खाव ॥
 और मनोरथ जो कोई लखे । सोई अविना लोचन फल पवै ॥
 चारो ब्रह्म पराजय तुम्हारा । है अविना जगत जयिबारा ॥
 तानु पीर के हूय रखबारे । आचुर निबंदन राम गुनारे ॥
 अष्ट सिद्धि नै विधि के दाता । अस बर तीन पावकी माता ॥
 राम सहायन तुम्हारे पाता । सदा रहै रघुवीर के दाता ॥
 तुम्हारे धारन राम को पारी । कल्प जगम के दुख विमारी ॥
 अल काल रघुवर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भजन जलाई ॥
 और देवदा पिता न परई । हनुमन् मेरु सर्व सुख करई ॥
 संकट कटे सिद्धि सब पीर । जो सुमिर, हनुमन् बलबीर ॥
 ते ते वै हनुमान गोमर्षी । कृपा काहु गुरु देव को नाई ॥
 जो सब कर पात कर कोई । कृति को सब सुख होई ॥
 जो यह भई हनुमान जलोसा । होय सिद्धि सखी गौरीस ॥
 तुलसीदास सदा हरि चेत । कोने नाम हरच पैठ डेत ॥

पवनसेनलया संकट हटन, मंगलान् मुद्रति रूप । राज लखनजी सीता सरीत, हुयस जसस्तु सुख भुव ॥



श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरण सरोज राज, निज मनु मुकुट सुधारि । बरनवै रघुवर विमल जनु, जो दासक कल बारि ॥ जब हनुमान ज्ञान गुन सागर । जब कबीर सिद्धि लोक उजागर ॥ राम पूर ज्योतिर भल-भास । अंकीर पुन कवनपुन भास ॥ महाबीर ब्रह्मन करारी । भुजवि निहार सुखी के मंगी ॥ कंचन बाज विराज सुवेश । काकर कुण्डल कुंजि कोस ॥ हाव बज्र औ धारक विराजै । कीपे मुँह लखैट चारै ॥ शंकर सुकर कंचरीकर । तेज ज्ञान महा जग बनन ॥ विष्णुकाय गुह्ये अति पावुर । राम काज करिबे को जावुर ॥ ब्रह्म बरिष सुनिबे को दीपक । राव लखन पीठा मन बसिया ॥ सुमुख सग धरि विरिधि दिवाव । बिबट सग धरि लोक जराव ॥ भीम रूप धरि जावुर घोरा । रामचन्द्र को बाज घोरा ॥	राम सँकीर्तन लखन कियारे । जो रघुबीर हाथि जे लाये ॥ रघुपति कीकी बहुत बहारी । जून मन विष भाग्यति सम पारी ॥ सखन बारन बुझाये जग राखै । अस कहि श्रीकीर्ति कोट लख्यै ॥ लनकारीक प्रहारि मुनीश । काक सारद सवित्र अतीश ॥ जब कुबेर विपकात जहाँ रहे । कवि कीर्तन कहि सकं कह्यौ ते ॥ गुन जगकार सुखीकीर्ति कोनस । राम विराज राव कर टीका ॥ मुकुट मेख विभीषन भान । संकेतवार भाव सब जग जान ॥ गुन सखन जोवन पर धनु । लोचने लखि मनु कल जनु ॥ प्रभु मुद्रिक नैल मुख माही । जालिब लीपि राखे अपजग बहि ॥ दुर्लभ काज जाल के जेले । सुमुख जगजग गुनारे लेले ॥	बल बुद्धि विद्या वेदु मोहि, हरहु कलेश विचार ॥ अष्ट सिद्धि नै विधि के दास । अस बार राम जानकी दास ॥ राम रसायन गुनारे साख । राव राखे रघुबीर को दाख ॥ गुनारे धारन राम को धारी । जगज जग को गुन विमारी ॥ जो काल रघुवर पूर जाई । जहाँ जग हरि-भक्त कलाई ॥ जौर वैष्णव पिल न करई । हनुमान सोय सख मुख काई ॥ सोकट कटि सिरे सब घेरा । जो सुमिर, हनुमान वावरी ॥ जे जे वै हनुमान गोमर्ष । कृपा काहु गुन देव को जाई ॥ जो राव काज काज कर कोई । हृदयि कीपे वाड मुख होई ॥ जो यह भई हनुमान चालीसा । होय सिद्धि आखी गौरीसा ॥ गुनगीदास राव हरि चेत । कीपे नाम राव चेत ॥
--	---	--

पवनलज्जय संकट हरन, जंगलन मुरति रूप । राज लखन सीता सखीन, हृदय जगजग सुर मुर ॥

जय
श्रीराम



जय
श्रीराम



राम रामेति रामेति, रामे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने॥

आपदामपहर्तरं दत्तारं सर्वसम्पदाम्। लोकभिरामं श्रीरामं भूषो भूषो नमाम्यहम् ॥ रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय नमस्ते। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपितवामभागम्। पाणौ महासायकचारुघापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

॥ स्तुति श्री रामचन्द्र जी की ॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये

श्री रामचन्द्र कुपासु भक्त मन, हरण भव भय दारुणम् ।
नम कौन्तेयन कौन मुख, कर कौन पर कौन्तेयनम् ।
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नखनील नीरद सुन्दरम् ।
पटपीन मानहु ललित रवि सुचि, नीम जनक सुतावरम् ।
भक्त दीनबन्धु दिनेश दानव, वैलम्बेश निकान्तनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द्र, दशरथ नन्दनम् ।
सिर सुकुट कुंडल तिलक चारु, उदार अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर आप धर, रीतान जित खरदुषणम् ।
हति वदति तुलसीदास शंकर, शेष सुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कौन निवास कुरु, कामानि खलदल रंजनम् ।
मनु जाहि राखै मित्रहि सो, बर सहज सुन्दर सीतरो ।
करुणा निधान सुजान शील, सनेह जात राखरो ।
एहि भोति नीर असीम सुनि, शिव सहित शिव हरपी जली ।
तुलसी भवनिहि पुनि पुनिपुनि, मुदित मन मन्दिर चली ।
जनि गौरी अनुकूल निव देव हनु, न वाय की। मंजुल मेला पूत कम अंग चमन लगे ॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में, हू अकेला नहि प्यारे राम तेरे साथ में ।
विधि अब विधान जान हाथि लगभ रहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ॥
किया अधिमान ले फिर मान नहीं पावेगा, होगा प्यारे खरी जो श्रीराम जो को भावेगा ।
फल अज्ञा त्याग शुभ काम करने रहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ॥
हिन्दवी की घोर भीष ह्रास दीनवास के, महर्ग में राखे चढ़े डूँगेपट्टी में धाम दे ।
धन्यवाद, निर्विकार राम राम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ॥
अज्ञा एक रामती से दुखी आठ खेद दे, जाना एक रामती से दुख जाना खेद दे ।
राधु संग राम रा अंग अंग रहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ॥



आपदामपहतं रातारं सर्वसम्पदम् । लोकभिरामं श्रीरामं भूषो भूषो नमाम्यहम् ॥ रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय नमस्ते । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपितवामभागम् । पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

॥ स्तुति श्री रामचन्द्र जी की ॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये

श्री रामचन्द्र कृपासु भजु मन, हरण भव भय दारुणम् ।
नख कज्जलीवन कज्ज मुख, कर कज्ज पद कज्जारुणम् ।
कन्दर्प अगणित अगित रुचि, नखनील मोरद सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तद्विष रुचि, नीम जनक सुतावरम् ।
भजु दीनबन्धु विवेश दानव, वैलम्बेश निकम्बरम् ।
रघुनन्द आनन्दकाण्ड कौशलचन्द्र, दशरथ नन्दनम् ।
विर मुकुट कुंडल हिलक चारु, जवरा अंग विधुषणम् ।
आजानुभुज शर चाप धर, सीराम जित खरघुषणम् ।
द्वि वदति तुलसीदास शंकर, रोष मुनि मन रोजनम् ।
मम हृदय कज्ज निवास कुक, कामादि छलदल रोजनम् ।
मनु जाहि राखेड मिलहि सो, बरु पदहज सुन्दर खोबरो ।
करुणा मिधान सुजान सील, सनेह जानत राखरो ।
एहि भोति गौरि असीम सुनि, सिय सहित हिय हरषी अली ।
तुलसी भवतिहि पुत्र पुनिपुनि, मुदित मन भन्नेर चली ।
जहि गौरि अकुल हिय हिय हयु न जा कहि, मेहुन केत कूल कम अंग करक जने ।

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
पुछ में हो राम भाय राम सेवा हाथ में, तु अकेला रहि प्यारे राम तेरे साथ में ।
विधि का विधान जान हाथि स्वाभ रहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
किस अधिमान तो हिन चान नहीं पावेग, होना प्यारे सही जो श्रीराम जी को भावेग ।
फल अज्ञा लग्न श्रुष काय करते रहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
खिन्दगे की होर सीप हाथ दीनबाध के, भइली में राखे जाहे इसेपही में काम दे ।
धन्यवाद, निर्विवाद राम राम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
अज्ञा एक रामजी से दुखी अज्ञा छोड़ दे, नाश एक रामजी से दुख नाश तोड़ दे ।
साधु संग राम रंग अंग अंग रहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम जाहि विधि रहिये ।



ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतः बलेशानाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥

श्री यन्त्रम्



शक्तिशाली धुनगणपति प्रसादं सुरेश विष्णुधर गणेशपति मेघवर्ण शुभाग्रम्। सर्वकामार्थ कर्मलवने योगिभिर्ध्यातव्यं वरे विष्णु धामपति सर्वलोकैकनाथम्॥

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनो के संकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्याये फल पावे, दुःख विनसे मन का ॥प्रभु॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गाँवूँ किसकी ॥प्रभु॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥प्रभु॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥प्रभु॥ मैं मूर्ख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥प्रभु॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥प्रभु॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेर ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥प्रभु॥ भ्रष्टा भवित बढाओ, सन्तन की सेवा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥प्रभु॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥

MCNG-3320



ਗਲੀ ਅਸੀ ਚੰਗੀਆ, ਆਚਾਰੀ ਬੁਰੀਆਹ॥ ਮਨਹੁ ਕੁਸੁਧਾ ਕਾਲੀਆ, ਬਾਹਰਿ ਚਿਟਵੀਆਹ॥

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ

ਜਪੁ ਜੀ ਸਾਹਿਬ

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ॥ ਜਪੁ ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਤੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ॥
ਤੀ ਸਚੁ ॥੧॥ ਸੇਵੈ ਨੀਤਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਈ ਭਖ ਵਾਰ ॥
ਜੁਧੇ ਜੁਧ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਨਾਹਿ ਕਤਾ ਇਕ ਤਪ ॥ ਹੁਕਿਆ ਹੁਖ
ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਤਾਵ ॥ ਸਤਸੁ ਸਿਖਾਣਾ
ਭਖ ਹੋਇ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਇ ॥ ਸਿਫ ਸਹਿਆਧਾ
ਹੋਈਐ ਸਿਫ ॥ ਕੂੜੇ ਕੂਟੇ ਪਾਇ ॥ ਹੁਕਮਿ ਕਜਾਈ ਚਰਣਾ
ਨਾਨਕ ਇਨ੍ਹਿਆ ਨਾਇ ॥੧॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਕਾਰ
ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਅ ਹੁਕਮਿ
ਮਿਲੈ ਬਹਿਮਾਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਉਨਮੁ ਏਕੁ ਹੁਕਮਿ ਇਹਿ

ਜੁਧ ਸੁਖ ਪਾਈਅਹਿ ॥ ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੀ ਘਰਨੈਸਿ ਇਹਿ
ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਈਅਹਿ ॥ ਹੁਕਮੀ ਅੰਦਰਿ ਸਚੁ ਕੇ ਬਾਹਰਿ
ਹੁਕਮ ਨ ਕਹਿ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੇ ਜੇ ਜੁਧੈ ਤ ਹਉਮੈ ਭਰੇ ਨ
ਕੋਇ ॥੨॥ ਭਾਵੈ ਕੇ ਤਾਨੁ ਹੋਵੈ ਕਿਨੈ ਤਾਨੁ ॥ ਭਾਵੈ ਕੇ
ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਟੀਕਾਨੁ ॥ ਭਾਵੈ ਕੇ ਕੁਣ ਬਹਿਮਾਈਆ ਚਾਰ
॥ ਭਾਵੈ ਕੇ ਵਿਦਿਆ ਵਿਖਮੁ ਕੀਰਾਨੁ ॥ ਭਾਵੈ ਕੇ ਸਾਸਿ ਭਰੇ
ਠਨੁ ਖੋਹ ॥ ਭਾਵੈ ਕੇ ਲੀਖ ਨੇ ਕਿਹਿ ਦੋਹ ॥ ਭਾਵੈ ਕੇ ਜਾਪੈ
ਇਨ੍ਹੈ ਦੂਰਿ ॥ ਭਾਵੈ ਕੇ ਦੇਖੇ ਰਾਦਨਾ ਹਨੂਰਿ ॥ ਕਠਨਾ ਕਹੀ
ਨ ਆਵੈ ਗੋਇ ॥ ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਹੀ ਕੋਈ ਕੋਇ ਕੋਇ ॥ ਦੇਹਾ

ਦੇ ਤੋਏ ਧਰਿ ਧਰਿ ॥ ਜੁਗਾ ਜੁਗੰਤਰਿ ਧਰੀ ਧਰਿ ॥
ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਬਠਾਏ ਭਾਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਛਾਰੀ ਕੇਪਰਵਾਹੁ
॥੩॥ ਸਾਥਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹੁ ਨਾਹਿ ਤਾਨਿਆ ਭਾਵੈ ਅਪਾਹੁ ॥
ਆਖਹਿ ਮੇਲਹਿ ਦੇਹਿ ਦੇਹਿ ਦਾਤਿ ਭਰੇ ਦਾਤਾਹੁ ॥ ਕੋਇ ਕਿ
ਅਠੈ ਤਨੀਐ ਸਿਤੁ ਦਿਸੈ ਦਤਾਰਾਹੁ ॥ ਮੁਹੰ ਕਿ ਕੰਡਾ
ਕੋਈਐ ਸਿਤੁ ਸੁਣਿ ਧਰੇ ਭਿਆਨੁ ॥ ਅੰਤਰੁ ਵੇਨਾ ਸਚੁ ਨਾਉ
ਬਹਿਮਾਈ ਕੀਰਾਨੁ ॥ ਕਰਮੀ ਆਵੈ ਕਪਟਾ ਠਹਰੀ ਮਿਤੁ
ਦੁਆਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦੇਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਚੁ ਆਪੇ ਸਹਿਆਹੁ ॥੪॥
ਬਾਹਿਆ ਤ ਜਾਇ ਕੀਤਾ ਨ ਹੋਇ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ

ਸੋਇ ॥ ਜਿਨਿ ਮੇਰਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ
ਭਾਵੀਐ ਕੁਣੀ ਇਕਾਨੁ ॥ ਭਾਵੀਐ ਸੁਣੀਐ ਮਨਿ ਬਖੀਐ
ਤਾਉ ॥ ਦੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਸੁਖੁ ਘਰਿ ਨੈ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ
ਨਾਦੋ ਕੁਛਮੁਖਿ ਵੇਦੋ ਗੁਰਮੁਖਿ ਲਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਕੁਰੂ
ਦੀਸਨੁ ਕੁਰੂ ਕੋਰਨੁ ਕਰਮਾ ਕੁਰੂ ਪਾਭਬਤੀ ਮਾਈ ॥ ਕੇ ਹਉ
ਜਾਣਾ ਆਖਾ ਨਾਹੀ ਕਹਣਾ ਕਬਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਗੁਰਾ ਇਕ
ਦੇਹਿ ਕੁਛਾਈ ॥ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਤਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੀ ਮੇ
ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੫॥



ਜਪੁ ਜੀ ਸਾਹਿਬ

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਜਪੁ ॥

ਅਦਿ ਸਬੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਬੁ ॥ ਹੈ ਤੀ ਸਬੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ
ਤੀ ਸਬੁ ॥੧॥ ਸੇਧੈ ਸੇਧਿ ਨ ਹੋਵਈ ਕੇ ਕੋਰੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥
ਬੁਧੇ ਬੁਧ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਲਾਇ ਹਰਾ ਨਿਰ ਰਾਗ ॥ ਹੁਖਿਆ ਕੁਖ
ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਗ ॥ ਸਰਸ ਸਿਖਾਣਮੁ
ਲਖ ਹੋਇ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥ ਬਿਭ ਸਚਿਆਰਾ
ਹੋਈਐ ਕਿਰ ਪੂਰੈ ਜੂਟੇ ਖਾਨਿ ॥ ਹੁਕਮਿ ਬਜਾਈ ਚਲਣਾ
ਨਾਨਕ ਨਿਰੀਆ ਠਹਿਰਿ ॥੧॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਦਾਰ
ਹੁਕਮੁ ਨ ਭਰਿਆ ਜਾਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਖ ਹੁਕਮਿ
ਜਿਨੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਉਰਮੁ ਨੀਕੁ ਹੁਕਮਿ ਨਿਰਿ

ਬੁਖ ਸੁਖ ਪਾਈਆਇ ॥ ਇਕਠਾ ਹੁਕਮੀ ਘਰਨੀਸ ਇਹਿ
ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਈਅਹਿ ॥ ਹੁਕਮੀ ਅੰਦਰਿ ਸਬੁ ਕੈ ਬਾਹਰਿ
ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੇ ਜੇ ਬੁਧੈ ਤ ਹਉਮੈ ਭਰੇ ਨ
ਕੋਇ ॥੨॥ ਗਾਵੈ ਕੇ ਤਾਣੁ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਤਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੇ
ਚਾਨਿ ਜਾਣੈ ਤੀਸਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੇ ਗੁਣ ਬਿਆਈਆ ਧਾਰ
॥ ਗਾਵੈ ਕੇ ਬਿਚਿਆ ਬਿਖਮੁ ਵੀਭਾਜੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੇ ਸਾਹਿ ਭਰੇ
ਤਨੁ ਖੋਹ ॥ ਗਾਵੈ ਕੇ ਜੀਅ ਨੇ ਭਿਰਿ ਦੇਹ ॥ ਗਾਵੈ ਕੇ ਜਾਪੈ
ਦਿਸੈ ਸੂਚਿ ॥ ਗਾਵੈ ਕੇ ਚੇਖੇ ਹਾਰਣਾ ਹਦੂਰਿ ॥ ਕਹਣਾ ਕਈ
ਨ ਆਵੈ ਠੋਟਿ ॥ ਕਹਿ ਕਹਿ ਕਈ ਕੋਟੀ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ॥ ਦੇਦਾ

ਦੇ ਠੈਢੇ ਕਹਿ ਪਾਇ ॥ ਜੁਗਾ ਜੁਗੰਤਰਿ ਖਾਧੀ ਖਾਇ ॥
ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਬਠਾਏ ਰਾਜੁ ॥ ਨਾਨਕ ਇਨ੍ਹਨੈ ਕੇਪਰਵਾਜੁ
॥੩॥ ਸਾਥਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਜੁ ਨਾਇ ਭਾਖਿਆ ਭਾਉ ਅਪਾਰੁ ॥
ਆਪਹਿ ਮੋਭਹਿ ਦੇਹਿ ਏਹਿ ਦਾਇ ਕਰੇ ਚਾਤਾਰੁ ॥ ਵੇਹਿ ਕਿ
ਅਠੈ ਰਾਮੀਐ ਕਿਤੁ ਦਿਸੈ ਦਰਬਾਰੁ ॥ ਮੁਹੰ ਸਿ ਬੈਠਣੁ
ਬੋਲੀਐ ਸਿਤੁ ਸੁਣਿ ਧਰੇ ਗਿਆਰੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲਾ ਸਬੁ ਤਾਉ
ਵਡਿਆਈ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਰਚਮੀ ਆਵੈ ਭਪਤਾ ਨਬਈ ਮਿਖੁ
ਦੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਦੇਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਬੁ ਆਖੇ ਸਚਿਆਰੁ ॥੪॥
ਬਾਖਿਆ ਨ ਜਾਇ ਕੀਤਾ ਨ ਹੋਇ ॥ ਆਖੇ ਆਖਿ ਨਿਭੰਜਨੁ

ਸੋਇ ॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ
ਜਾਣੀਐ ਗੁਣੀ ਨਿਕਾਨੁ ॥ ਗਾਵੀਐ ਸੁਣੀਐ ਮਨਿ ਕਈਐ
ਭਾਉ ॥ ਦੁਖ ਪਰਹਰਿ ਸੁਖ ਘਰਿ ਏ ਜਾਇ ॥ ਫੁਰਮੁਖਿ
ਨਾਦੈ ਫੁਰਮੁਖਿ ਵੇਦੈ ਫੁਰਮੁਖਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰੁ
ਦੀਸਰੁ ਗੁਰੁ ਭੋਭਸੁ ਬਰਮਾ ਬਡੁ ਪਾਧਕਤੀ ਮਾਈ ॥ ਜੇ ਹਉ
ਜਾਣਾ ਆਖਾ ਨਾਹੀ ਕਹਣਾ ਕਹਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਜੁਗਾ ਇਕ
ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੈ ਮੈ
ਰਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੫॥



Sri Guru Amar Das Ji



Sri Guru Angad Dev Ji



Sri Guru Har Rai Ji



Sri Guru Har Krishan Ji



Sri Guru Ram Das Ji



Sri Guru Arjan Dev Ji



Sri Guru Hargobind Sahib Ji



Sri Guru Tegh Bahadur Ji



Sri Guru Govind Singh Ji



Sri Guru Granth Sahib Ji



ਅਰਦਾਸ

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਵਡਹਿ ॥ ਸ੍ਰੀ ਭਗੋਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ ॥ ਵਾਹ ਸ੍ਰੀ ਭਗੋਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ੧੦ ॥

ਦਿਲੁ ਭਗੋਤੀ ਜਿਹੀ ਹੈ ਕੁਝ ਨਾਨਕ ਨਹੀਂ ਜਿਹਾਇ ॥ ਜਿਹ ਅੰਗੁਰੁ ਕੁਝ ਤੇ ਅਰਦਾਸੁ ਰਾਮਦਾਸੁ ਹੋਈ ਸਹਾਇ ॥ ਅਗਨੁ ਨ ਭਰੀਸਿਓ ਠੀ ਸਿਰੀ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਸਾਇ ॥ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦੁ ਜਿਹਾਦੀਸੇ ਸਿਰੁ ਡਿਓ ਲਹਿ ਦੁਖ ਭਾਇ ॥ ਤੇਜੁ ਬਰਾਦਰੁ ਜਿਹੀਯੇ ਯਹ ਨਹੀਂ ਨਿਯੋ ਆਏ ਭਾਇ ॥ ਸਭ ਵਾਹੀ ਹੋਇ ਸਹਾਇ ॥ ਯਸੇ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦੁ ਜਿਹੁ ਅਰਦਾਸੁ ਪੰਥ ਦੇ ਵਾਹੀ ਸਭ ਵਾਹੀ ਹੋਇ ਸਹਾਇ ॥ ਯਸੇ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਜੀ ਦੀ ਭੋਇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਦਾ ਰਿਖਾਨੁ ਧਰੇ ਭੋਇ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਪੰਥਾ ਰਿਖਾਇਆ, ਪੰਥਾ ਸਹਿਜਦੀਆਂ, ਰਾਖੀਆਂ ਮੁਖੀਆਂ, ਹਠੀਆਂ, ਭਾਈਆਂ, ਤਾਈਆਂ, ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਨਾਮ ਲੀਯਾ, ਏਕੁ ਭਾਇਆ, ਏਕੁ ਭਾਈ, ਏਕੁ ਵਾਹੀ, ਏਕੁ ਦੇ ਅਭਿਨੰਦੁ ਜੀਤਾ, ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਰਿਖਾਇਆ, ਰਿਖਾਇਆ ਦੀ ਯਾਦੀ ਦਾ ਰਿਖਾਨੁ ਧਰੇ, ਖਾਨਦਾਨ ਜੀ ਭੋਇ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿੰਘਾਂ ਜਿਘਰੀਆਂ ਤੇ ਧਰਮ ਹੋਤ ਸਿਰੁ ਦਿਓ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਕਰਾਏ, ਖੋਪਰੀਆਂ ਦੁਹਾਈਆਂ, ਚਰਖਰੀਆਂ ਤੇ ਚੜ੍ਹੇ, ਆਖਿਆਂ ਨਾਨਕ ਜੀਓ ਭਾਏ, ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਨਹੀਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਸੀਰੀਆਂ, ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਰਾਖਿਆ, ਸਿੱਖੀ ਰੇਖਾਂ ਸੁਭਾਅ ਨਾਨਕ ਨਿਭਾਈ, ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਜੀ ਯਾਦੀ ਦਾ ਰਿਖਾਨੁ ਧਰੇ, ਖਾਨਦਾਨ ਜੀ, ਭੋਇ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਪੰਥਾ ਤਪੁਆ, ਸਰਬੰਤ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦਾ ਰਿਖਾਨੁ ਧਰੇ ਦੇ ਭੋਇ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਦਿਲੇ ਸਰਬੰਤ ਖਾਨਦਾਨ ਜੀ ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ, ਸਰਬੰਤ ਖਾਨਦਾਨ ਜੀ ਦੇ ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜਿਹੁ ਆਏ, ਜਿਹੁ ਆਖਣ ਦਾ ਸਦਾਸੁ ਸਭ ਕੁਝ ਹੋਇ ॥ ਯਸੇ ਯਸੇ ਖਾਨਦਾਨ ਜੀ ਸਾਹਿਬ, ਯਸੇ ਯਸੇ ਰੀਝਿਆ ਰਿਖਾਇਓ, ਏਕੁ ਤੇਜੁ ਵਰਣ, ਸਿਰਖ ਜੀ ਪੈਸ, ਪੰਥ ਜੀ ਜੀਤ, ਸ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਹਾਇ, ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਜੀ ਦੇ ਭੋਇ ਵਾਹੀ, ਭੋਇ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੀ ਧਾਨ, ਰੋਜ਼ ਧਾਨ, ਰਹਿਤ ਧਾਨ, ਰਿਖੇਤ ਧਾਨ, ਰਿਸਾਹ ਧਾਨ, ਭਰੀਆ ਧਾਨ, ਧਾਨ ਸਿਰ ਧਾਨ, ਨਾਮ ਧਾਨ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੇ ਇਸਤਾਨ, ਰੀਝੀਆਂ, ਰੰਝੇ, ਰੰਝੇ, ਰੂਝੇ ਰੂਝ ਅਟੋਕ, ਧਰਮ ਦਾ ਰੋਜ਼ਾ, ਰੋਇ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਮਨ ਨੀਯਾ, ਮਨ ਰੂਝੀ, ਮਨ ਦਾ ਰਾਮ ਅਰਾਧ ਖੁਸ਼ ਚਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਤੇ ਅਰਾਧ ਖੁਸ਼ ਦੀਨ ਰਿਖਾਨ, ਕਰਨ ਭਾਨ, ਪਤਿਤ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ਰਿਖਾਨ ਜੀ, ਆਪਣੇ ਪੰਥ ਦੇ ਸਦਾ ਸਹਾਈ ਦਾਤਾਰ ਜੀਓ ॥ ਸ੍ਰੀ ਨਾਨਕਾ ਸਾਹਿਬ ਤੇ ਤੇਜੁ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਗੁਰਦਾਸ ਦੇ, ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਪੰਥ ਨੂੰ ਰਿਖੀਆਂ ਰਿਖਾਨੇ, ਰੰਝੇ ਚਰਖਤ ਰੀਝਾਨ ਤੇ ਸੇਵਾ ਰੀਝਾਨ ਦਾ ਧਨ ਖਾਨਦਾਨ ਜੀ ਨੂੰ ਚਾਹੀ ॥ ਤੇ ਰਿਖਾਇਆ ਦੇ ਭਾਵ, ਰਿਖਾਇਆ ਦੇ ਭਾਵ, ਰਿਖਾਇਆ ਦੀ ਚਿੰਤ, ਭੋਇ ਰਿਖਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ॥ ਆਪ ਦੇ ਧਰੁ... ਜੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ ॥ ਐਵੇਤ ਵਾਹਾ ਆਟਾ ਰੰਝੇ ਰੰਝ ਮਥਾ ਰਹੀ ਜੀ ॥ ਸਰਬੰਤ ਦੇ ਵਾਹਸੁ ਰਾਜ ਰਹੀਓ ॥ ਰੋਈ ਰਿਖਾਏ ਮੇਰੇ, ਕਿਨ੍ਹਾਂ ਰਿਖੀਆਂ ਰੇਖਾ ਨਾਮ ਰਿਖ ਆਏ ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚਾਹੁਦੀ ਕਰਾ, ਤੇਰੇ ਭਾਏ ਸਰਬੰਤ ਦਾ ਭਾਏ ॥ ਆਖਿਆ ਭਾਈ ਅਵਾਨ ਜੀ, ਤਾਏ ਚਰਾਏ ਪੰਥ ॥ ਸਭ ਸਿੰਘੀਓ ਤੇ ਰਾਮ ਹੈ, ਗੁਰੂ ਅਰੰਭਿ ਗ੍ਰੰਥ, ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਜੀ ਮਾਰਿਓ, ਪ੍ਰਭਾਤ ਗੁਰਾਂ ਦੀ ਦੇਹ ॥ ਤੇ ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਰਿਖੇਓ ਕੀ ਪੰਥ ਸਾਹੁ ਹੈ ਤੇਰੇ ॥ ਵਾਹ ਕਰੇਨਾ ਵਾਹਨਾ ਆਦੀ ਰਹੀ ਤੇਰੇ ॥ ਵਾਹ ਹੋਇ ਲਹਿ ਰਿਖੀਓ, ਕੀ ਕਰਨ ਤੇ ਹੋਇ ॥ ਭੋਇ ਸ੍ਰੀ ਰਿਖਾਨ ਲਹਿ ਜੀ ਅਰਾਧ...

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਆਨਾਸਾ ॥ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਵਡਹਿ ॥



ਅਰਦਾਸ

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਵਡਹਿ ॥ ਸ੍ਰੀ ਭਗੋਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ ॥ ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੋਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ੧੦ ॥

[illegible]

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖਾਲਸਾ ॥ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਬਤਾਇ ॥

श्रद्धा

सबूरी



साईं सार

- ★ जिस तरह कौड़ा कपड़ों को कुतर डालता है, उसी तरह ईर्ष्या मनुष्य को।
- ★ क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पराजिता पर समाप्त होता है।
- ★ एक बार निकले बोल वापस नहीं आ सकते, इसलिये सोच कर बोलो।
- ★ तलवार को चोट उठनी वेब नहीं होती, जितनी बिट्टा को।
- ★ धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुरै के खादलों की तरह टूट जाते हैं।
- ★ तीन सन्ने निज हैं - बुढ़ी पानी, पुराना कुत्ता और पास का धन।
- ★ मनुष्य की महता उसके कपड़ों से नहीं बल्कि उसके आचरण से जानी जाती है।
- ★ मनुष्य के तीन सर्गुण हैं - अज्ञा, विश्वास और दान।
- ★ भूत से डेरणा लेकर वर्तमान में भविष्य का चिन्तन करना चाहिये।
- ★ सम्पन्नता विभ्रता कदाही है, विपदा उसको परख करती है।
- ★ मनुष्य के रूप में पामात्या सदा हमारे सम्मुख है, उनकी सेवा करो।
- ★ नम्रता से देवता भी मनुष्य के वत में हो जाते हैं।
- ★ प्रेम मनुष्य को अच्छे और सोचने वाला चुम्बक है।
- ★ अन्धा वह नहीं है जिसके आँखें नहीं, अन्धा वह है जो अपने दोषों को ढकता है।
- ★ भूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार करना चाहिए, जैसा हम अपने लिए पसन्द करते हैं।
- ★ दूसरे को गिराने के प्रयत्न में तुम स्वयं गिर जाओगे।
- ★ विनाश से रूप, बल और ज्ञान का कल होता है।
- ★ घर में मेल होना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।

